

विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। —मारकस

सैटेलाइट के सफल लॉन्च से इसरो की साख बची

पाँच साल के लंबे इंतजार के बाद, इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) ने गत शुक्रवार को एक जियो-इमेजिंग सैटेलाइट स्पेस में स्थापित करने में सफल रहा है।
इओएस-०5 सैटेलाइट स्पेसपोर्ट श्रीहरिकोटा से उड़ान भरने के लगभग 18 मिनट बाद, तय सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में सफलतापूर्वक स्थापित हो गया। इसरो के लिए यह सिर्फ एक और लॉन्च नहीं था। उसके लगातार दो स्ट्रेटेंजिक मिशन फेल हो चुके थे, जिससे देश को कई सौ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। इसीलिए इसरो के लिये यह लॉन्च खास था और ऐसे मुश्किल समय पर हो रहा था जब उसके भविष्य को लेकर अनेक शंकाएं भी मीडिया में व्यक्त हो रही थी कि इसके रॉकेट (एक को छोड़कर) घरेलू कंपनियों को दिए जा रहे हैं, सरकार सैटेलाइट मैनुफैक्चरिंग और तमिलनाडु में प्रस्तावित स्पेसपोर्ट को भी प्राइवेट सेक्टर के लिए खोल रही है; लॉन्च इम्फ्रास्ट्रक्चर का निजीकरण किया जा रहा है; नेवल सी नेविगेशन सिस्टम अघर में लटका हुआ है; और सरकार चाहती है कि इसरो रिसर्च, डेवलपमेंट और बड़े साइंटिफिक मिशन पर ध्यान दे। यह भी सच है कि संस्थान के कर्मचारियों में भी अनिश्चिता का माहौल बालाया जाता रहा है।
ज़रूरी मिशन में शामिल कई लोग अपने पद छोड़ कर जा चुके हैं और बाकी स्टाफ भी अपनी भविष्य की भूमिकाओं के बारे में स्पष्ट नहीं है। इस प्रष्ठभूमि में, शुक्रवार का जीआईसेट-1 ए सैटेलाइट, जिसका नाम बदलकर अर्थ ऑब्ज़र्वेशन सैटेलाइट-०5 (ईओएस-०5) कर दिया गया, को जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल-एमके (जीएसएलवी-एमके) से लॉन्च करने का यह मिशन, कहीं ज़्यादा अहमियत रखता था।
इओएस-०5, जीआईसेट-1 का लंबे समय से रुका हुआ रिप्लेसमेंट है, जो अगस्त 2०21 में अपने लॉन्च के बीच में ही छो गया था। उसके बाद से इसरो इतने बार पर चुन रहा है कि पांच साल का गैप किस वजह से हुआ -- चाहे वह पेलोड डेवलपमेंट हो, सैटेलाइट मैनुफैक्चरिंग हो, जीआईसेट-1 और जीआईसेट-1ए के बीच स्पेसिफिकेशन्स में बदलाव हो, रॉकेट का न होना हो या कुछ और। इसरो ने ईओएस-०5 को एक एजाइल जियो इमेजिंग सैटेलाइट बताया है जिसे जियोस्टेशनरी ऑर्बिट से लगातार अंतराल पर बड़े एरिया को लगभग रियल-टाइम इमेज देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह मुख्य रूप से साफ आसमान (क्लाउड-फ्री) परिस्थिति में प्राकृतिक संपदा और आपदा की घटनाओं की इमेजिंग के लिए बनाया गया है। इसका फायदा इसकी लोकेशन में है। लोअर ऑर्बिट में परंपरागत अर्थ-ऑब्ज़र्वेशन सैटेलाइट के उलट, एक जियोस्टेशनरी इमेजिंग सैटेलाइट बार-बार एक बड़े एरिया पर निगाह रख सकता है, जिससे वह उस क्षेत्र में तेजी से बदलती घटनाओं की निगरानी करने और किसी खास एरिया को लगातार इमेज देने के लिए उपयोगी हो जाता है। वैसे, कैमर से लैस किसी भी सैटेलाइट का इस्तेमाल कई अन्य मकसदों के लिए भी किया जा सकता है और इसलिए सभी को, एक तरह से, ‘स्ट्रेटेंजिक सैटेलाइट’ कहा जा सकता है।

शुक्रवार का लॉन्च एक बड़ा पेलोड लेकर गया था और साथ में पिछली असफलताओं का बड़ा बोझ भी। इसलिए, ईओएस-०5 एक ढेर से आने वाले रिप्लेसमेंट सैटेलाइट से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। लगभग 2,3६7 किलो वजन वाला, यह सैटेलाइट जीएसएलवी-एमके की बाराई गई पेलोड कैपेसिटी 2,250 किलो से ज़्यादा भारी है। इसके वजन के कारण इस मिशन ने सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट का इस्तेमाल किया जो एक इंटरमीडिएट एप्लिटिकल ऑर्बिट है, जिसमें एपोजी लगभग 35,780 किलोमीटर की लक्षित जियोसिंक्रोनस ऊंचाई से कम होती है। इस ऑर्बिट से, ईओएस-०5 ने अपनी तय जियोस्टेशनरी पोजिशन तक पहुंचने के लिए ऑनबोर्ड मोटर्स का इस्तेमाल किया। टेक्निकली, यह मौजूदा लॉन्च व्हीकल की कैपेसिटी को बढ़ाने की इसरो की काबिलियत का एक और प्रदर्शन था। इसके स्ट्रेटेंजिकली, दांव ज़्यादा ऊंचे हैं, क्योंकि ईओएस-०5 के इस सफल लॉन्च ने कई महंगी नाकामियों के बाद भरोसा वापस लाने की प्रक्रिया शुरू की है। अगर यह फेल हो जाता, तो भारत के लॉन्च सिस्टम और स्ट्रेटेंजिक स्पेस प्रोग्राम के भरोसे पर अनेक सवाल उठने लगते। वह लॉन्च, यह लॉन्च जीएसएलवी-एमके, पांच साल से ढेरी से आई स्ट्रेटेंजिक क्षमता और शायद सबसे ज़रूरी, इसरो की भरोसा वापस लाने की क्षमता का टेस्ट थी था। चिंता सिर्फ पैरे के नुकसान को नहीं थी। यह भरोसे, ट्रांसपैरेंसी और भारत की अपने स्पेस एगेंट्स पर तब निर्भर रहने की क्षमता के बारे में थी जो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। कह सकते हैं कि इसरो

अधिकृत तौर पर बताया गया कि तीसरे स्टेज के परफॉर्मंस के आखिर में रॉकेट में गड़बड़ी आ गई, जिससे उसकी तय उड़ान अपने रास्ते से भटक गयी। पीएसएलवी मिशन से वाकिफ एक्सपर्ट का कहना है कि यह फेलियर पीसएलवी-सी61 जैसा ही लग रहा था। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ज़रूरी मिशनों में एक के बाद एक फेलियर होना बहुत ज़्यादा इतेफाक रहा। इन्हीं परिस्थितियों में शुक्रवार का मिशन इसरो की साख को जबरदस्त चुनौती थी। मिशन की सफलता से वह साख बच गई।

हालाँकि इसरो के अधिकारियों ने बताया था कि पीएसएलवी से जुड़े सुधार के उपायों पर चर्चा अब पूरी तरह से “जानने को ज़रूरत” के आधार पर की जा रही है। इसलिए शुक्रवार के लॉन्च को लेकर चिंता की वजह स्ट्रेटेंजिक रूप से ज़रूरी भारतीय स्पेस मिशन से जुड़ी कई नाकामियों की वजह से ही थी। इसके अलावा कई नेविगेशन सैटेलाइट पहले ही इम्पोंर्टेंट एप्लींक घड़ियों में खराबी की वजह से पूरी क्षमता खो चुके हैं। कई लोग स्पेस सेक्टर में इस मुश्किल दौर की शुरुआत जीआईसेट-1 से मानते हैं। वह 2,2६8किलो का सैटेलाइट जीसएलवी एमके के क्रायोजेनिक अपर स्टेज में खराबी आने के बाद अंतरिक्ष में खो गया था। इसरो की फेलियर एनालिसिस रिपोर्ट ने नतीजा निकाला था कि वेंट और रिलीफ वाल्व से लीकेज की वजह से क्रायोजेनिक स्टेज के इग्निशन के दौरान लिक्विड हाइड्रोजन टैंक का प्रेशर असामान्य रूप से कम हो गया था। इसके चलते फ्यूल बूस्टर ज्वॉ पं में खराबी आई, जिससे आखिरकार मिशन फेल हो गया। इसके बाद इसरो ने दिखाया कि जीसएलवी एमके रिकवर कर सकता है, और उसने एनवीएस-०1, इन्सेट-3डीएस और इंडो-यूएस निसार सैटेलाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। इसलिए, जानकार लोगों का कहना है कि भारत के स्पेस प्रोग्राम को सिर्फ नाकामियों वाला प्रोग्राम बताया गलत होगा। इसरो को अगला बड़ा झटका एनवीस-०2के साथ लगा, जिसे 29 जनवरी, 2०25 को श्रीहरिकोटा से 1०0वें रॉकेट लॉन्च के तौर पर लॉन्च किया गया था। 3०0 करोड़ रुपये के नेविगेशन सैटेलाइट को एक और 3०0 करोड़ रुपये के जीसएलवी एमके से जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में सफलतापूर्वक इंजेक्ट किया गया। लेकिन वह अपने तय जियोस्टेशनरी ऑर्बिट तक नहीं पहुंच सका क्योंकि ऑर्बिट बढ़ाने के लिए ज़रूरी ऑक्सीडाइज़र वाल्व नहीं खुल पाए। इसरो ने समस्या तो मानी लेकिन यह कभी नहीं बताया कि वाल्व क्यों फेल हुए। सैटेलाइट एक्सपर्ट्स का मानना है कि समस्या ऑक्सीडाइज़र वाल्व को पावर सप्लाई करने वाले इलेक्ट्रिकल कनेक्टर में शुरू हुई होगी। इससे एक और बुनियादी सवाल उठता है कि मिशन-क्रिटिकल सिस्टम में रिडंडेंसी होनी चाहिए उस पर ध्यान क्यों नहीं गया? सैटेलाइट सिस्टम से परिचित अधिकारियों के अनुसार वाल्व, इलेक्ट्रॉनिक्स और पावर सिस्टम, सभी में रिडंडेंट बैकअप थे। लेकिन रिडंडेंसी तभी काम करती है जब बैकअप सिस्टम सच में प्राइमरी सिस्टम से अलग हो। अगर दोनों सिस्टम एक कॉमन पॉइंट पर मिलते हैं, तो एक फेलियर दोनों को खत्म कर सकता है। यदि इन नियमों को माना गया, तो ऑक्सीडाइज़र वाल्व तक पावर पहुंचने से किस चीज ने रोका? इसरो के ही एक रिटायर्ड सीनियर अधिकारी का कहना है कि प्राइमरी और रिडंडेंट दोनों पावर सप्लाई एक ही कनेक्टर से गुजरी होगी, जिससे पूरी रिडंडेंसी का मकसद नाकाम हो गया।

दो पीएसएलवी मिशन के लगातार फेल होने से चिंता का बड़ जवाब स्वाभाविक ही था। पिछले साल 1८ मई, 2०२5 को, पीएसएलवी-सी61 उड़ान भरने के करीब छह मिनट बाद फेल हो गया, जिससे ईओएस-०9 (आरआईसेट-1बी) सर्विलांस सैटेलाइट और लॉन्च व्हीकल का नुकसान हुआ। कुल नुकसान का अनुमान करीब ८50 करोड़ रुपये था। इओएस-०9 में एक सिंथेटिक अपचर्च रडार था जो हर मौसम में निगरानी कर सकता था और इसका मकसद भारत की स्ट्रेटेंजिक ऑब्ज़र्वेशन क्षमता को मज़बूत करना था। अंदाज लगाया जाा है कि पीसेलवी-सी61 का फेलियर शायद किसी खराब वाल्व या इलेक्ट्रिकल कनेक्टर की वजह से हुआ होगा, जिसकी वजह से तीसरे स्टेज के ऑपरेशन के दौरान प्रेशर कम हो गया था। इसके आठ महीने से भी कम समय बाद, 12 जनवरी, 2०26 को, पीसेलवी-सी62 भी फेल हो गया। यह डीआरडी ओ के लेटेस्ट हाइपरस्पेक्ट्रल टोही सैटेलाइट, अन्वेषा (इंओएस-यून-1) के साथ पंद्रह छोटे भारतीय और विदेशी सैटेलाइट ले जा रहा था। अधिकृत तौर पर बताया गया कि तीसरे स्टेज के परफॉर्मंस के आखिर में रॉकेट में गड़बड़ी आ गई, जिससे उसकी तय उड़ान अपने रास्ते से भटक गयी। पीएसएलवी मिशन से वाकिफ एक्सपर्ट का कहना है कि यह फेलियर पीसएलवी-सी61 जैसा ही लग रहा था। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ज़रूरी मिशनों में एक के बाद एक फेलियर होना बहुत ज़्यादा इतेफाक रहा। इन्हीं परिस्थितियों में शुक्रवार का मिशन इसरो की साख को जबरदस्त चुनौती थी। मिशन की सफलता से वह साख बच गई।

—अतिथि संपादक, राजेश्वर बोड़ा (वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राशिफल

बुधवार 9 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2०83, आश्लेषा नक्षत्र दिन ३:14 तक, शिव योग रात्रि 9:52 तक, तैत्तिल करण दिन 12:31 तक, चन्द्रमा आज दिन ३:14 से सिंह राशि में स्थिति: कर्या।

ग्रह : सन्धि: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह
आज भद्रा दिन 12:31 रात्रि 11:32 तक रहेगी। आज अघोरा चजुरदशी व्रत, मास शिवरात्रि, जैन पयुषण आरम्भ (पंचमी पक्ष)
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 1०:51 से 12:24 तक, चर ३:3० से 5:०3 तक, लाभ 5:०3 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 12:०0 से 1:3० तक, सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:35

मे़ष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। दिन के मध्याह्न पश्चात व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरिपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्य में व्ययधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनासुचारु बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
आज संश्लिप्त कार्यों में समय खर्चाव हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागवीड़ रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संपातित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

जन्म के साथ ही समापन की ओर काँकरोच जनता पार्टी



प्रो.कैलाश सोडाणी

देश के सार्वजनिक जीवन में बिना किसी जमीनी संघर्ष के मात्र सोशल मीडिया के माध्यम से अवतरित काँकरोच जनता पार्टी आजकल चर्चा में है। चर्चा में व्यंग्य ज़्यादा है, शालीनता कम है। संस्था के नामकरण में भी गंभीरता एवं दीर्घकालीन सोच का अभाव है, हास्य एवं विनोद का स्वर ही ज़्यादा सुनाई देता है। नीट परीक्षा की असफलता एवं बेरोजगारी से पीड़ित युवा साथियों की भावनाओं से खेलते हुए अधिजीत रिपके ने जन्त-संतर पर जो अभिनय किया, उससे प्रथम दृष्टया तो यही लगा कि देश की युवा पीढ़ी को एक ईमानदार

राजनैतिक नेतृत्व मिलने जा रहा है परन्तु धीरे-धीरे देश के युवाओं को समझ में आ गया कि आन्दोलन के असली सूत्रधार कौन है और उनका मकसद क्या है?

किसी भी आन्दोलन की सफलता के लिए उसका पारदर्शी होना अत्यन्त आवश्यक है। सीजेपी के इस आन्दोलन पर कितना खर्च हुआ और किसने किया, कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गयी। सामान्य चर्चा में देश की राजनीति में पराजित चेहरों एवं भारत विरोधी विदेशी एजेंन्सीज का नाम सामने आ रहा है।

प्रजातन्त्र में सरकार विरोधी आन्दोलन होना बहुत ही सामान्य बात है और प्रजातन्त्र की सफलता के लिए सरकारी नीतियों के विरुद्ध समय-समय पर विरोध प्रदर्शन होना भी आवश्यक है। इस प्रकार के आन्दोलनों को भी एक मर्यादा होती है, अनुशासन होता है।

सीजेपी के इस आन्दोलन में कुछ असामाजिक तत्वों का बोलबाला था, जो देश एवं प्रधानमंत्री को बहुत ही घटिया तथा अमर्यादित शब्दों में सम्बोधित कर रहे थे। दुःखद स्थिति तो यह थी कि अनेक छात्राै भी इसी गाली-गालीच की भाषा में बात कर रही थीं। सोशल मीडिया पर

इस दृश्य को देखने और सुनने के बाद देशवासियों का सिर शर्म से झुक गया। ऐसे संस्कार विहीन छात्र-छात्राओं की टीम कहीं से आयी और उन पर किसी का नियंत्रण भी दिखाई नहीं दिया। इन छात्राओं के माता-पिता ने समाज में हुए अपमान को कैसे बर्दाश्त किया होगा, समझ सकते हैं।

इस सारे घटनाक्रम में समाजसेवी सोनम वांगचुक के सत्याग्रह में अवश्य ईमानदारी दिखाई देती है। उन्होंने कहा है कि लोकतंत्र में ऐसी शान्तिपूर्ण अभिव्यक्ति को पनपने दीजिये। ये हमारा प्रदर्शन नहीं, आग्रह है। पुलिस ने यह आन्दोलन शान्तिपूर्ण तरीके से होने दिया, रोक-टोक नहीं लगाई, यह स्वागत योग्य है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आन्दोलन की समाप्ति के बाद काँकरोच जनता पार्टी ने सोनम वांगचुक को पदों के पीछे धकेल दिया है।

झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में गांधली के खिलाफ आंदोलनरत छात्रों को काँकरोच जनता पार्टी का क्या केवल नैतिक समर्थन देना ही पर्याप्त है? जन्त-संतर का आंदोलन विचार परीक्षाओं में गांधली के लिए था, झारखंड में इससे कहीं ज़्यादा गंभीर

रोजगार-मूलक परीक्षाओं में गांधली होने के बावजूद सीजेपी की निष्क्रियता में कमजोर राजनीतिक सोच की गंध आती है। चार-पांच वर्ष पूर्व राजस्थान में भी भर्ती परीक्षाओं में हुई अनेकानेक गड़बड़ियों के बावजूद अधिजीत दिपके अमेरिका का आनंदमय जीवन छोड़कर नहीं आ पाए। सीभास्य से देश का युवा समझदार है, उसे लंबे समय तक सत्य से दूर नहीं रखा जा सकता है।

आर. एस. एस. प्रमुख डा. मोहन भागवत ने जेन-जी के प्रदर्शनों के सम्बन्ध में बहुत ही सटीक विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन भी संवाद का एक तरीका है। लेकिन इसका उद्देश्य सहमति बनाना हो न कि विभाजन। उन्होंने कहा कि जेन-जी की शिकायतें सही हैं, नाराजगी जायज है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार की ज़रूरत है। शिक्षा को व्यापार मत बनने दीजिये। वह सबके लिए समान रूप से सुलभ होनी चाहिये।

सरकार को जीडीपी का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करना चाहिये। सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिय समाधान है। युवाओं में सोशल मीडिया के जिम्मेदार उपयोग का आत्मनुशासन विकसित करना होगा। हमारी युवा शक्ति की गति ही देश की

डिजिटल अफीम : साइलेंट डिप्रेशन की ओर धकेलती रील्स-शॉर्ट्स की सनक

की तस्वीर का संकेत और चेतावनी हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, सोशल मीडिया और फोन युवाओं के लिए एक्सेप्ट मोड (भापने का जरिया) और डोपामाइन (फील गुड हार्मोन) का प्राथमिक स्रोत बन चुके हैं। जब यह कनेक्शन टूटता है, तो वे अत्यधिक चिड़चिड़े या हिंसक हो जाते हैं। महंगे गैजेट्स को स्टेटस सिंबल मानकर युवा अपनी आर्थिक स्थिति से परे जाकर ज़िद करने लगते हैं। सामाजिक तौर पर ये समस्या घरों में आपसी संवाद की कमी से भी बढ़ रही है, जहां एक ही घर में रहकर भी लोग स्क्रीन में खोए रहते हैं, जिससे आपस में भावनात्मक जुड़ाव और बातचीत खत्म हो रही है। ये पहचान न आने वाला अवसाद है।

महाराष्ट्र के संभाजीनगर के गांव में हुए ताजा घटनाक्रम के अनुसार, 19 साल के कुणाल ने आईफोन खरीदकर और उसकी किश्त चुकाने को लेकर अपने पिता से ज़िद की थी, जिसे लेकर घर में अनबन और विवाद हुआ। गुस्से और नाराजगी में कुणाल घर से निकलकर पहाड़ की चोटी पर जा बैठा और करीब 4 घंटे तक हंगामा व आत्महत्या की धमकी देता रहा। सूचना पर माता-पिता, पुलिस, स्थानीय लोग और दमकल विभाग मौके पर पहुंचे तथा उसे समझाने की कोशिश की। मां ने बेटे को मनाने के लिए अपना मंगलसूत्र तक देने की बात भी कही। बातचीत के दौरान जब पिता उसे बचाने के लिए आगे बढ़े, तो उनका संतुलन बिगड़ गया और कुणाल के साथ पिता भी नीचे गिर पड़े। अपनी आंखों के सामने पति और बेटे को नीचे गिरते देख सदमे में आइ मां भी पहाड़ी से छल्लांग लगी दी, जिससे एक ही परिवार के तीनों सदस्यों की मौत हो गई।

मनोचिकित्सकों का मानना है कि किशोरों में अवसाद अक्सर उदासी के रूप में नहीं, बल्कि अत्यधिक गुस्से और चिड़चिड़ेपन के रूप में बाहर आता है, जिसे माता-पिता बदतमीजी या नखरा समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, हमारे हाथ स्मार्टफोन से चिपके रहते हैं। रील्स और शॉर्ट्स को बिना सोचे-समझे स्कॉल करने की यह आदत धीरे-धीरे ईंसानों को एक गहरे साइलेंट डिप्रेशन की ओर धकेल रही है। शोध कहते हैं कि प्रतिदिन 3 से 4 घंटे से अधिक स्क्रीन पर बिताने वाले लोगों में अवसाद/एंजायटी का जोखिम दोगुना हो जाता है। केंद्र सरकार ने बच्चों और युवाओं में बढ़ती डिजिटल लत को एक गंभीर साइलेंट क्राइसिस घोषित किया है। सर्वे में माता-पिता से मिले फीडबैक के आधार पर बच्चों में ये बदलाव देखे गए हैं। 61 फीसदी बच्चों में अधीरता बढ़ गई है। 58 प्रतिशत बच्चों में अत्यधिक गुस्सा और आक्रामकता देखी गई है।

सर्वे कहता है कि लगभग आधे बच्चों में नींद की कमी, डिप्रेशन और सुस्ती पाई गई है। वहीं शॉर्ट वीडियो (रील्स) के लूप में फंसे रहने से युवाओं की एकाग्रता क्षमता बहुत कम हो गई है। फोन छीनने में आक्रामकता से रोकने पर बच्चे हिंसक कदम उठा रहे हैं। लखनऊ में एक 16 वर्षीय लड़के द्वारा गेमिंग की लत के कारण टोकन पर अपनी मां की हत्या करने जैसी दिल दहलाने वाली घटना सामने आई है। एम्स दिल्ली और अमेरिकी मेडिकल जर्नल की रिपोर्ट्स के अनुसार, स्क्रीन और सोशल मीडिया एंडिक्शन के शिकार बच्चों में आत्महत्या से

संबंधित जोखिम अधिक पाया गया है। गान्धियाबाद में ऑनलाइन गेमिंग और मोबाइल की लत के चलते तीन नाबालिग बहनों द्वारा नौवीं मंजिल से कूदकर खुदकुशी करने की घटना इसका उदाहरण है। सड़कों, रेलवे ट्रैक और खतरनाक ऊंचाई पर इंस्टाग्राम रील्स या शॉर्ट वीडियो शूट करने के जुनून में हर साल सैकड़ों भारतीय युवा अपनी जान गंवा रहे हैं या गंभीर हादसों का शिकार हो रहे हैं। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 15 से 24 वर्ष के 14 प्रतिशत युवा (हर 7 में से 1) अवसर अवसाद या मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं। निमहांस सर्वेक्षण के अनुसार, 13 से 17 वर्ष के 7.3 फीसदी किशोर गंभीर मानसिक विकारों से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्रों में यह संख्या और भी अधिक पाई गई है। एनसीईआरटी छात्र सर्वेक्षण में स्कूल जाने वाले 11 प्रतिशत छात्रों ने अत्यधिक चिंता, 14 फीसदी ने चरम भावनाओं और 43 प्रतिशत ने मुड़ रिवर्स की शिकायत की है। आईसीएसआर अध्ययन में कॉलेज जाने वाले 32 प्रतिशत छात्रों में मध्यम से गंभीर अवसाद के लक्षण देखे गए हैं। स्पेन लैम्ब की युवा मानसिकता रिपोर्ट के अनुसार, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया से जुड़े 13-17 वर्ष के भारतीय किशोरों में आक्रामकता, गुस्सा और आत्म-नियंत्रण की कमी तेजी से बढ़ रही है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के अनुसार, भारत में 15 से 29 वर्ष के युवाओं की मृत्यु का एक मुख्य कारण आत्महत्या है। कम उम्र में स्मार्टफोन का अत्यधिक उपयोग, स्क्रीन टाइम बढ़ना और संयुक्त परिवारों का टूटना युवाओं को अकेला बना रहा है।

लंदन डायरी : ब्रिटिश स्वाभिमान के प्रतीक हैं लंदन के लाल टेलीफोन बूथ

लन्दन अपनी हरियाली के लिए जाना जाता है। हरियाली से मिलता लाल अंग्रेजों को पसंद नहीं आया क्योंकि लोग इन्हें सही ढंग से देख नहीं पाते। लोग अत्यधिक हरियाली के कारण इनसे टकरा जाते, ऐसे स्थिति में उन्हें लाल रंग से रंगा गया जो दूर से ही दिख जाते। बाद में 192० में जब टेलीफोन बूथ बने तो उन्हें लाल रंग से ही रंगा गया। तब से आजतक ये बूथ दुनिया भर में ब्रिटिश सांस्कृतिक आइकॉन के रूप में देखे जाते हैं। बूथ में रखा टेलीफोन चालू अवस्था में है। लंदन भ्रमण के दौरान मुझे इन बूथों को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने बूथ में जाकर देखा तो ये चालू अवस्था में मिले। इसी के साथ अब डिजिटल टेलीफोन बूथ भी लंदन की सड़कों पर देखने की मिल जायेंगे। इनके लाल रंग के होने की भी एक कहानी है। बताते हैं उन्नीसवीं शताब्दी में सबसे पहले डाक विभाग ने अपने पोस्ट बॉक्स बनाये थे हेर रंग के थे।



भावनाओं का एक अहम हिस्सा, जिसे वह जिंद रखना चाहते हैं। ये बूथ 1936 से इंग्लैंड की खास पहचान बने हुए हैं। 1926 से टेलीफोन बूथों को ब्रिटिश शासन के प्रतीक टचयूडर

ताज से सजाया गया ।

ब्रिटेन का पहला पब्लिक फ़ोन बूथ, जिसे 1 के नाम से जाना जाता है, 192० में लंदन की सड़कों पर आया। कन्नोट से बने और लाल दरवाज़े वाले इस बूथ में कोई खास सुंदरता नहीं थी। सन 1923 में, ज़्यादा आकर्षक टेलीफ़ोन बॉक्स बनाने के लिए एक डिज़ाइन प्रतियोगिता शुरू की गई। इसमें मशहूर आर्किटेक्ट्स के प्रस्ताव आए, जिनमें सर ज़ाहेस गिब्लर्ट स्कॉट भी शामिल थे जो विजेता बने।

स्कॉट का शानदार, कास्ट आयरन वाला डिज़ाइन सेंट पैन्क्रास में सर जॉन सोएन के मक़बरों की गुंबददार छत से प्रेरित था। इस तरह, 2 लाल टेलीफ़ोन बॉक्स का जन्म हुआ, जिसमें चमकीला लाल रंग और औपट-डेको स्टायल था, जो जल्द ही लंदन की सड़कों पर छा गया। 1935 में, किंग जॉर्ज पंचम की सिल्वर ज़ुबली

मनाने के लिए 6 मॉडल पेश किया गया। यह लंदन के बाहर लगाया गया पहला लाल टेलीफ़ोन बॉक्स था, जिससे यह पसंदीदा डिज़ाइन ब्रिटेन के कस्बों और गाँवों तक पहुँचा। इसने लाल बॉक्स की देशव्यापी लोकप्रियता की शुरुआत की।

धीरे-धीरे लाल टेलिफ़ोन बूथ सीन से ग़ायब होने लगे। लेकिन स्थानीय समुदायों और ब्रिटिश दूरसंचार के प्रयासों से उनमें से सैकड़ों लाल टेलीफ़ोन बक्खों को पुस्तकालयों के रूप में पुनर्जीवित कर दिया है। ब्रिटेन के लोग अपने लोकप्रिय ब्रिटिश लाल टेलीफ़ोन बॉक्स को छोटे-छोटे पुस्तकालयों में बदल रहे हैं। यहां से कोई भी पुस्तक घर ले जाने के लिए स्वतंत्र है, बशर्ते वे इसे वापस लाएँ या इस के बदले घर से लाकर कोई दूसरी पुस्तक रख दें।

—बाल मुकुन्द ओझा, वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार



पंडित अनिल शर्मा

कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह
आज भद्रा दिन 12:31 रात्रि 11:32 तक रहेगी। आज अघोरा चजुरदशी व्रत, मास शिवरात्रि, जैन पयुषण आरम्भ (पंचमी पक्ष)
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 1०:51 से 12:24 तक, चर ३:3० से 5:०3 तक, लाभ 5:०3 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 12:०0 से 1:3० तक, सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:35

मे़ष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। दिन के मध्याह्न पश्चात व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरिपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्य में व्ययधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनासुचारु बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
आज संश्लिप्त कार्यों में समय खर्चाव हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागवीड़ रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटक